CELEBRATING 60 YEARS साहित्य अकादेमी

साहित्योत्सव 2015

9-14 मार्च

साहित्य अकादेमी

दैनिक समाचार बुलेटिन

बृहस्पतिवार, 12 मार्च 2015

आज के कार्यक्रम

भारत की अलिखित भाषाएँ
विषयक परिसंवाद
पूर्वाह्न 10.00 बजे से
रवींद्र भवन परिसर

भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र
विषयक संगोष्ठी
पूर्वाह्न 11:00 बजे
साहित्य अकादेमी
सभागार
प्रथम तल

स्थापना दिवस व्याख्यान
प्रख्यात कन्नड लेखक
एस.एल. भैरप्पा द्वारा
सायं 6:00 बजे
रवींद्र भवन परिसर

पाठक नहीं हैं लेखकों के पास

- रमेशचंद्र शाह

साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे साहित्योत्सव 2015 के तीसरे दिन सम्मानित लेखकों से प्रख्यात लेखकों/विद्वानों से बातचीत के कार्यक्रम **आमने-सामने** के अंतर्गत आज पाँच लेखकों ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया।

असमिया लेखिका अरूपा पतंगीया कलिता से प्रदीप आचार्य ने बातचीत की। अरूपा जी ने कहा कि वह असम के प्राचीनतम इतिहास से लेकर स्वतंत्रता संग्राम तक के आंदोलन के इतिहास से बेहद प्रभावित हैं और अपनी रचनाओं में इसका प्रयोग भी करती हैं। *जुबान* नाम के अपने उपन्यास की चर्चा करते हुए कहा कि इसके लिए मैंने स्वतंत्रता संग्राम के समय की पृष्ठभूमि का चयन किया। उसमें उस दौरान महिलाओं और बच्चों द्वारा उठाई गई कठिनाइयों का ज़िक्र है। स्वतंत्रता आंदोलन के चलते ज़्यादातर पुरुष तो घरों से बाहर रहते थे, जिसके चलते पुलिस/प्रशासन द्वारा पैदा की गई मुश्किलों का सामना घर में रह रही महिलाओं को करना पड़ता था।

हिंदी के लिए पुरस्कृत रमेशचंद्र शाह ने प्रयाग शुक्ल को अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि अपने अंतर्मन को अभिव्यक्त करने के लिए ही मैंने अलग-अलग विधाएँ चुनी हैं। प्रकृति और एकांत ने जहाँ मुझे कविता लिखने को प्रेरित किया तो बाज़ार के बीच रहते हुए मैंने मानव के विभिन्न चरित्रों को समझा

और उसको अपनी कहानियों-उपन्यासों द्वारा व्यक्त किया। आत्मकथा लिखने संबंधी प्रश्न के जवाब में उन्होंने कहा कि लेखक अपने लेखन में अपना आत्म ही उड़ेलता है और अगर उसे पाठक पसंद कर रहे हैं तो संभवतया उसे आत्मकथा लिखने की कोई ज़रूरत नहीं है। *विनायक* उपन्यास के बारे में शाह जी ने बताया कि इस उपन्यास को लिखने का कारण उनके पाठकों की वे दो चिट्ठियाँ हैं, जिनमें उन्होंने जानना चाहा था कि उनके पहले उपन्यास *गोबर गणेश* का नायक, जिसकी उम्र उस समय 27 वर्ष थी, वो वर्तमान में किस तरह जीवन व्यतीत कर रहा है।

उन्होंने कहा कि आज के लेखक का दुर्भाग्य है कि उसके पास अब पाठक नहीं हैं। किसी भी साहित्य की परिभाषा बिना पाठकों के तय नहीं हो सकती। हम लेखकों को इस पर विचार करना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने अपने लेखक मित्रों, विशेषकर अशोक सेक्सरिया को याद करते हुए कहा कि ऐसे सजग पाठक और मित्र ही अच्छे साहित्य के आधार होते हैं।

जयंत विष्णु नारळीकर ने विकास खोले से बातचीत के दौरान कहा कि नेहरू ने जिस वैज्ञानिक समाज का सपना देखा था वो अभी तक अधूरा है और कई मामलों में हम और ज़्यादा अंधविश्वासी हुए हैं। भगवान और धर्म के अस्तित्व को लेकर किए गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि विज्ञान इसका जवाब हाँ या ना में नहीं दे सकता। विज्ञान किसी भी विचार को तभी मानता है, जब वह उसके परीक्षण पर खरा उतरता है। यह प्रक्रिया बहुत लंबी है। वैसे भी विज्ञान में हम जैसे-जैसे समझते जाते हैं, हमें लगने लगता है कि हमारी समझ और कम होती जा रही है।

पंजाबी लेखक जसविंदर का परिचय देते हुए उनसे बात कर रही वनीता जी ने कहा कि ग़ज़ल विधा के लिए अकादेमी पुरस्कार पाने वाले वे दूसरे ग़ज़लकार हैं। इनकी ग़ज़लों में पारंपरिक ग़ज़ल से अलग हटकर सामाजिक सरोकारों, विशेषकर पंजाबी परिवेश की शब्दावली और मुहावरे की सटीक अभिव्यक्ति मिलती है। जसविंदर ने कहा कि पुरस्कार पाने के

बाद मुझे लगा कि मैं ठीक रास्ते पर चल रहा हूँ और यह मेरे लिए एक हौसला अफ़जाई की बात है।

तेलुगु लेखक राचपालेम चंद्रशेखर रेड्डी ने जे.एल. रेड्डी के साथ अपनी बातचीत में कहा कि अच्छे साहित्य के लिए अच्छी आलोचना का भी होना बहुत ज़रूरी है। हालाँकि यह मुश्किल काम है, लेकिन ये साहित्य की उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य भी है। उन्होंने कहा कि आज के समाज में बुक कल्चर घट रहा है और लुक कल्चर बढ़ रहा है। हमें इसमें संतुलन लाने की ज़रूरत है।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी की उपसचिव रेणु मोहन भान ने किया।

अतीत के गालियारे से

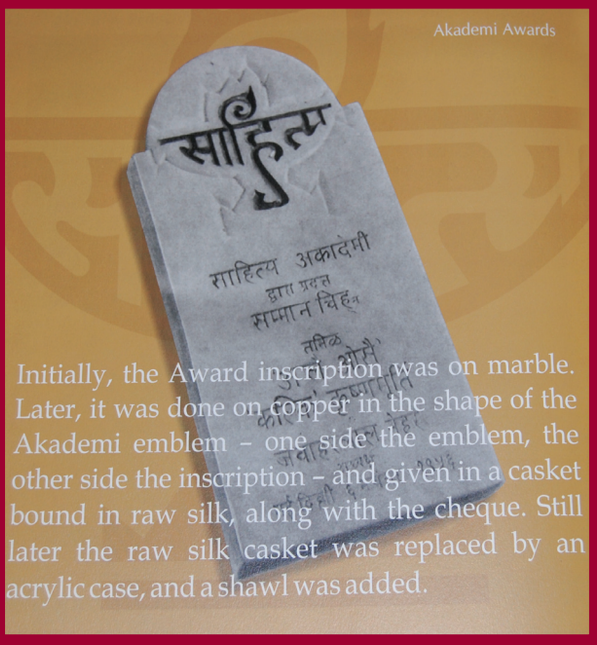

आरंभ में साहित्य अकादेमी पुरस्कार पट्टिका संगमरमर की होती थी

युवा साहिती

भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों का रचना-पाठ

साहित्योत्सव के अंतर्गत 11 मार्च को आयोजित युवा लेखक सम्मिलन 'युवा साहिती' का उद्घाटन करते हुए हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार गिरिराज किशोर ने कहा कि इस आयोजन के माध्यम से आज मुझे अपने भविष्य से बात करने का अवसर मिल रहा है। साहित्य हमारा संरक्षक है। गिरिराज जी ने आगे कहा कि अकादमियों के सामने अपनी स्वायत्तता बनाए रखने की चुनौती है और इसका दारोमदार केवल उन पर नहीं, बल्कि साहित्यकारों पर भी है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि लेखन युवा और बूढ़ा नहीं होता, लेकिन लेखक युवा और बूढ़ा होता है, उस पर काल का असर होता है। उन्होंने यह भी कहा कि युवा लेखकों को किसी का अनुसरण नहीं करना चाहिए और किसी विचारधारा के दलदल में नहीं फँसना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रख्यात हिंदी कथा लेखिका चित्रा मुद्गल ने कहा कि हमें समझना होगा कि साहित्य की भूमिका क्या है? उन्होंने युवा रचनाकारों का आह्वान किया कि वे अपनी मातृभाषा को बचाएँ एवं अभिव्यक्ति का माध्यम अपनी मातृभाषा को बनाएँ।

उद्घाटन सत्र का समाहार करते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने युवा लेखकों के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि हम अपनी परंपराओं को युवा पीढ़ी को हस्तांतरित कर रहे हैं। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा लेखन को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयत्नों के बारे में बताया।

युवा साहिती का प्रथम सत्र कविता-पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता लब्धप्रतिष्ठ हिंदी आलोचक डॉ. मैनेजर पांडेय ने की। रणजीत गोगाई (असमिया), अनिल चावड़ा (गुजराती), वी.आर. कारपेंटर (कन्नड), प्रवीण काश्यप (मैथिली), वाङ्थोई खुमन (मणिपुरी), टीका भाइ (नेपाली) और नरेंद्र कुमार भोई (ओड़िया) ने अपनी-अपनी मातृभाषा में एक कविता सुनाई तथा कुछ कविताओं के हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में मैनेजर पांडेय ने कहा कि कविता मनुष्य की मातृभाषा होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हर भाषा की लय होती है और भाषा का संगीत मन को छूता है, इसीलिए कविता समझी जाने से पहले संप्रेषित होती है। कविता अपनी परंपरा से जुड़ती है और मातृभाषा अपने इतिहास तथा संस्कृति से।

द्वितीय सत्र कहानी पाठ को समर्पित था, जिसमें विशाल खांडेपारकर (कोंकणी) एवं श्रीमती इंदु मेनन (मलयाळम्) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। विशाल खांडेपारकर की कहानी का शीर्षक था 'सोमा घड़ी', जो समाज में फैले अंधविश्वास को बयान करती थी। इंदु मेनन ने अपनी मलयाळम् कहानी को अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत किया। इसमें मानवीय संवेदना की गहन अभिव्यक्ति थी। सत्र की अध्यक्षता हिंदी के जाने-माने कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने की। उन्होंने कहानियों पर टिप्पणी करते हुए रचनाकारों को बधाई दी और अपनी 'ख़ून' शीर्षक कहानी का पाठ भी किया।

तीसरा सत्र कविता-पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता हिंदी के वरिष्ठ कवि विष्णु नागर ने की। इस काव्य गोष्ठी में हिंदी के प्रांजल धर, कश्मीरी के सागर नज़ीर, मराठी के रवि कोरडे, पंजाबी के गगनदीप शर्मा, राजस्थानी के कुमार अजय, संताली के आनूपा मारांडी, संस्कृत के राजकुमार मिश्र, सिंधी के अनिता दयाल तेजवानी, तमिळ की उमा देवी, तेलुगु के मंत्री कृष्ण मोहन एवं उर्दू के वासिफ़ यार ने अपनी कविताएँ एवं ग़ज़लें प्रस्तुत कीं। अध्यक्षीय टिप्पणी में विष्णु नागर ने कहा कि बाज़ारवाद एवं भूमंडलीकरण के दौर में रचनाकार अपनी रचनाओं द्वारा जो योगदान कर रहे हैं, वह सराहनीय हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आज की युवा पीढ़ी निराशा एवं आशा को किस-किस तरह से अपनी कविता में बुन रही है -- यह देखने योग्य है। अंत में श्री नागर ने अपनी कविता 'एक ग़रीब ही कह सकता है' पढ़ी। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

गीता चंद्रन द्वारा भरतनाट्यम प्रस्तुति

साहित्योत्सव के दौरान 11 मार्च की शाम मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला में प्रख्यात नृत्यांगना गीताचंद्रन द्वारा भारतीय भाषाओं की कालजयी रचनाओं पर आधारित नृत्य प्रस्तुतियाँ भरतनाट्यम शैली में की गईं। इस प्रस्तुति में गुरु शिव कुमार, सुधा रघुरामन, एम.वी. चंद्रशेखर और जी. रघुरामन ने गीत-संगीत के माध्यम से संगति की। नृत्य के लिए गीताचंद्रन ने कालिदास, अष्टछाप के कवि हित हरिवंश, संस्कृत कवि अमरु तथा मैथिली कवि विद्यापति की रचनाओं का चयन किया था, जिनके माध्यम से वसंत ऋतु का शृंगार वैभव, रास लीला आदि की प्रस्तुतियों को दर्शकों द्वारा बेहद पसंद किया गया।

आगामी कार्यक्रम

12-14 मार्च 2015 : 'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषयक **राष्ट्रीय संगोष्ठी**
साहित्य अकादेमी सभागार, प्रथम तल : पूर्वाह्न 10.00 बजे

13 मार्च 2015 : पूर्वोत्तरी : उत्तर पूर्व एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन,
रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.30 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम : राजस्थानी लोक गायन, मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला : सायं 6.30 बजे

14 मार्च 2015 : बाल साहिती : आओ कहानी बुनें : बाल साहित्य से संबंधित दिन भर का कार्यक्रम,
रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.30 बजे

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली-110001, दूरभाषः 011-23386626-28

DD NATIONAL
Media Partner

पुस्तक प्रदर्शनी : प्रति दिन पूर्वाह्न 10 से सायं 7.00 बजे तक
रवींद्र भवन परिसर

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
दूरभाष : +91 11 23386626-28, फ़ैक्स : +91 11 23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in, वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in